बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी



जनवरी–मार्च, 2026

मूल्य 35 रुपए

बालप्रहरी का शुल्क अब ऑनलाइन जमा कर सकते हैं।

संरक्षक सदस्यता	:	6,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,500 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	400 रु.
एक प्रति	:	35 रु.
बालप्रहरी खाता संख्या	:	0962000101357002
आई.एफ.सी कोड	:	पी.यू.एन.बी. 096200
बैंक नाम	:	पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

कृपया सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद सूचना एवं अपना पता वाट्सअप नंबर 7088394370 या E-mail : balprahri@gmail.com पर शेयर करके सहयोग कीजिएगा।

संरक्षक सदस्यता के साथ अपना पासपोर्ट साइज फोटो तथा संक्षिप्त परिचय भी भिजवाकर सहयोग कीजिएगा।

UPI ID: balprahri@oksbi

क्यू आर कोड के माध्यम से भी आप शुल्क / आर्थिक सहयोग जमा कर सकते हैं।

बालसाहित्य संगोष्ठी का आमंत्रण

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि बच्चों की पत्रिका बालप्रहरी/बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी माह जून में राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी का आयोजन जन सहयोग से किया जा रहा है। इस वर्ष बालप्रहरी एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट के संयुक्त तत्वावधान में 12,13 तथा 14 जून, 2026 को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट, पिथौरागढ़, उत्तराखंड में 'बच्चे और बालसाहित्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी में बाल कहानी, बाल कविता, बाल कवि सम्मेलन, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, आलेख वाचन, पुस्तक लोकार्पण एवं सम्मान समारोह आदि का आयोजन किया जाना है। बालसाहित्य में रूचि रखने वाले साहित्यकार सादर आमंत्रित हैं। प्रतिभागियों को पंजीकरण शुल्क 300 रुपए तथा बालप्रहरी की सदस्यता अनिवार्य रूप से जमा करनी है। संगोष्ठी में प्रतिभाग करने वाले आमंत्रित अतिथियों के सामूहिक आवास व भोजन की व्यवस्था 12,13 तथा 14 जून, 26 को आयोजक मंडल द्वारा की जाएगी। अपनी सहभागिता की सूचना/सहमति/आलेख वाचन हेतु आलेख 14 अप्रैल, 2026 तक डाक या ई मेल से भिजवाकर मदद कीजिएगा। यदि आप परिवार के साथ आ रहे हैं तो आपको अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 9412162950 पर संपर्क किया जा सकता है। आप सबकी गरिमामय उपस्थिति से संगोष्ठी को एक नई दिशा मिलेगी, ऐसा हमारा मानना है। सहमति की प्रतीक्षा करेंगे।

- उदय किरौला
संपादक बालप्रहरी/सचिव बालसाहित्य संस्थान
दरबारी नगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
E-mail. balprahri@gmail.com

नए संरक्षक : श्री भाष्करानंद पांडे



श्री भाष्करानंद पांडे जी का जन्म 10 अक्टूबर,1969 को रानीखेत तहसील स्थित बित्थड़ ग्राम में हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा अपने गांव के विद्यालय प्राथमिक विद्यालय पांडेकोटा और उच्च प्राथमिक विद्यालय देवलीखेत टाना में हुई। कक्षा 9 से 12वीं तक की शिक्षा नेशनल इं.का.रानीखेत, स्नातक की शिक्षा डिग्री कॉलेज रानीखेत तथा बी.एड. व परास्नातक की शिक्षा कैंपस कॉलेज अल्मोड़ा में हुई। शिक्षा विभाग में उनकी प्रथम नियुक्ति अधीनस्थ सेवा चयन आयोग लखनऊ के माध्यम से सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी के पद पर 1997 में विकासखंड रामगढ़ में हुई। तदुपरांत उनके द्वारा विकासखंड बेतालघाट, सल्ट एवं रुद्रपुर में उप शिक्षा अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दी गई । डायट अल्मोड़ा में भी वह वरिष्ठ प्रवक्ता के रूप में तैनात रहे। तदुपरांत खंड शिक्षा अधिकारी कोटाबाग और गदरपुर में भी उन्होंने अपनी सेवाएं दी। खंड शिक्षा अधिकारी कोटाबाग बतौर उन्होंने लगातार 7 वर्षों तक मिशन मोटिवेशन एंड कंप्टीशन कार्यक्रम चलाया। न केवल विकासखंड कोटाबाग के परिषदीय परीक्षा के परिणाम में गुणात्मक वृद्धि हुई बल्कि विभिन्न शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों में भी विद्यालयों और छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसी को देखते हुए शैक्षिक प्रशासन के रूप में भारत सरकार की सर्वोच्च संस्था-राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान नई दिल्ली (नीपा) द्वारा उनको वर्ष 2018-19 में सर्वोत्कृष्ट नवाचार हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। मिशन मोटिवेशन और कंप्टीशन को उनके द्वारा विकासखंड गदरपुर और बाजपुर में भी जारी रखा गया और इस कार्यक्रम की वहां पर भी सर्वत्र सराहना हुई। मृदुभाषी और नवाचारी क्रियाकलापों के लिए जाने जाने वाले श्री पांडे वर्तमान में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट, पिथौरागढ़ के प्राचार्य के रूप में अपने नवाचारों को जारी रखते हुए अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

- संपर्क : प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
डीडीहाट, पिथौरागढ, मोबाइल - 8077635006

नए संरक्षक : कु० गायत्री बिष्ट



स्काउटिंग एंड गाइडिंग में ब्लाक से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक सक्रिय शिक्षिका कु. गायत्री बिष्ट छात्र-छात्राओं को स्काउट गाइड के लिए प्रेरित करती रहती हैं। उनका जन्म नैनीताल में हुआ। उनकी माता का नाम जीवंती बिष्ट तथा पिता का नाम दीवानसिंह बिष्ट है। वर्तमान में वे रा.बा.इ.कालेज चौखुटिया में शिक्षिका बतौर कार्यरत हैं। बालिकाओं को खेलों में प्रतिभाग करने के लिए वे प्रेरित करती हैं। उन्होंने बालिकाओं के लिए विद्यालय में क्रिकेट क्लब की स्थापना की है। विद्यालय में शिक्षण के अलावा कुमाउनी लोक संस्कृति के संरक्षण तथा प्रचार-प्रसार में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। अवकाश के दिनों में बालप्रहरी तथा भारत ज्ञान विज्ञान की कार्यशालाओं में भी उनका सहयोग मिलता रहा है। उनके अनुसार बालिकाओं को ग्रामीण अंचल में बालिका शिक्षा के लिए प्रेरित किए जाने की जरूरत है। बालिकाएं पढ़ने-लिखने के साथ ही क्या, क्यों तथा कैसे सवाल करना सीखें, ये बहुत जरूरी है। बालप्रहरी की ऑनलाइन व ऑफलाइन कार्यक्रमों से वे जुड़ती हैं। बालप्रहरी संरक्षक बतौर अन्य बच्चे भी उनके माध्यम से बालप्रहरी में अपनी प्रतिभा दिखाएंगे, ऐसा हमारा मानना है।

- संपर्क : मल्ली ताल, नैनीताल

RNI. UTTHIN/2004/18604
वर्ष-21 जनवरी-मार्च, 2026 अंक-01

संरक्षक :

डॉ. सरस्वती बाली	डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'	श्री सुरेंद्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा	डॉ. सुनीता रतूड़ी
श्री राजकुमार जैन 'राजन'	डॉ. आर.सी.रस्तोगी
श्री के.पी.एस.अधिकारी	डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी	डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया	श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी	सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'	डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा	सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन	डॉ. दीक्षा बिष्ट
डॉ.(मेजर) शक्ति राज	श्री दयानंद आर्य
श्री रविकांत खंडेलवाल	श्रीमती पुष्पा पाल
श्री श्यामपलट पांडेय	श्री संजय प्रजापति
श्रीमती नीमा पांडेय	श्री हेमचंद्र पंत
डॉ. डी. पी. चौधरी	श्री अरूण पंत
श्रीमती मोहनी बाजपेयी	डॉ. आशा बिष्ट
डॉ. ज्योति पांडे त्रिपाठी	श्रीमती माया पंत
श्री टी.वी.चंद्रा सुब्बा	डॉ.अशोक कुमार नेगी
श्रीमती संगीता गुप्ता	डॉ.जे.सी.दुर्गापाल
श्रीमती रत्ना लक्सम सुब्बा	श्री योगेश्वर सिंह
श्री विश्वप्रकाश मेहरा	श्री हेमंत यादव
श्री पुरुषोत्तम तिवारी	डॉ. शील कौशिक
श्रीमती रेखा लोढ़ा स्मित	श्री पवन कुमार
स्वामी गुरूकुलानंद 'कच्चाहारी'	श्रीमती प्रेमा राणा
डॉ. धाराबल्लभ पांडेय 'आलोक'	श्री कमल चोपड़ा
डॉ.चेतना उपाध्याय	श्रीमती कुमुद वर्मा
श्री रूद्र पौडियाल	श्री के.एन शर्मा
श्रीमती पुष्पलता जोशी 'पुष्पांजलि'	डॉ. सीमा गुप्ता
श्रीमती सरोजनी कुकरेती	डॉ. शकुंतला कालरा
श्रीमती विमला रस्तोगी	प्रो. गिरीशचंद्र पंत
डॉ. एम.एन.नौडियाल 'मनन'	श्री दुर्गेश्वर राय

संपादक :
उदय किरौला
संपादकीय सहयोग :
प्रमोद तिवारी
संतोष किरौला
कला पक्ष:
श्रीमती मोहिनी बाजपेयी

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	6,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,500 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	400 रु.
एक प्रति	:	35 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

बच्चों के नाम पाती			02
आपके पत्र			03
बच्चों की कलम से			05
कहानी :	स्वाभिमानी लड़का	डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'	21
	वृक्ष के आंसू	नमिता सिंह 'आराधना'	26
	प्यार बांटो	आरती आस्था	27
	हिचकी	डॉ. सेवा नंदवाल	30
	आसू के दादा जी की कसरत	हेमा बोहरे	33
	बेबी रोबो	बसंती पंवार	35
	मेंढक	विश्व प्रकाश मेहरा	36
	किशन की दादी	डॉ. राकेश चक्र	36
	घमंड	राजेंद्र कुमार सिंह	38
	बहादुर बबली	रामेंद्र कुशवाहा	39
	तालमेल	कन्हैया साहू 'अमित'	41
	साइकिल	डॉ. कृष्णा कुमारी	42
	ऑक्सीजन की लूटमार	सुधा भार्गव	43
कविता :	कुमाउनी/गढ़वाली कविता	विनीता जोशी /डॉ.उमेश चमोला	20
	जलेबी/नया साल	सतीश उपाध्याय/सुकीर्ति भटनागर	29
	सूरज दादा/सर्दी का मौसम	प्रिया देवांगन' प्रियू'/राजकुमार जैन	29
	चंदा मामा	राजेंद्र निशेश	29
	चिड़िया/मां	रूखसाना बानो/यशपाल शर्मा 'यशस्वी'	45
	ट्रैफिक मंत्री/अनमोल उपहार	अतुल कुमार खरे/नलिन खोईवाल	37
	मुर्गा/जलेबी	डॉ. मंजू पांडे 'उदिता' /दीक्षा जोशी	37
छब्बीस जनवरी/चीटीं		यतींद्र प्रताप साही/प्रभुदयाल श्रीवास्तव	37
चिड़िया/ मां		रूखसाना बानो/ यशपाल शर्मा 'यशस्वी'	45
जानकारी: बालसाहित्य की थाती: इंदिरा गौड़		नीरज पंत	04
उत्तराखंड का जिला : पिथौरागढ़		संतोष किरौला	19
ऐसा क्यों होता है?		घमंडीलाल अग्रवाल	23
शिकारी पक्षी : बाज		डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव	28
बोलो देवी दा		देवेंद्र मेवाड़ी	31
शहीद दिवस और भगतसिंह		कृपालसिंह शीला	32
प्रतियोगिताएं: निबंध प्रतियोगिता - 55			15
कविता लिखो प्रतियोगिता - 84			16
कहानी लिखो प्रतियोगिता - 84			18
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता - 84			48

अन्य :	चित्र पहेली	15	शब्द पहेली 41
	सूडोकू	16	रंग भरो 45
	चुटकुले/क्या आप जानते हैं	17	अंक पहेली 45
	पहेलियां/अनमोल वचन	19	पुस्तक परिचय 46
	अंक पहेली	34	पुस्तक प्राप्ति 48
	खोजबीन	38	

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन हल्द्वानी से मुद्रित तथा दरबारी नगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा,उत्तराखंड से प्रकाशित।
संपादक-उदय किरौला

संपर्क : संपादक बालप्रहरी, दरबारीनगर,अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 7088394370
E-mail.balprahri@gmail.com Web.:www.balprahri.com
Facebook-udaikiroulabalprahri WhatsApp-**7088394370**

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो!

''अंकल मैंने कल दिन से कुछ नहीं खाया है। हमें खाना खिला दो न.....,भूख लगी है....'' कहते हुए बच्चे हाथ जोड़ रहे थे। ऐसे आठ-दस बच्चों को लोग पकड़-पकड़ कर मार रहे थे। कोई लकड़ी से पीट रहा था तो कोई लात मारकर भगा रहा था।

बारात में पिता के साथ गए बालक सुरेश ने अपने पिताजी से पूछा, ''पापा! इन बच्चों को क्यों मार रहे हैं?''

सुरेश के पिता ने अपने बच्चे को उत्तर देते हुए कहा, ''ये भीख मांगने वाले बच्चे हैं। इनमें से कई कूड़ा बीनने वाले बच्चे होंगे। बारात में बगैर बुलाए खाने के लिए आ रहे थे। इसलिए इन्हें भगाया जा रहा है।''

''पापा! इतने बच्चों को खिला देते। बाद में इतना राशन तो बचता ही है न? जो लोग पार्टी करते हैं। उन्हें सबसे पहले गरीब व भूखों को भोजन कराना चाहिए। हमारी बारात में जितने लोग आए हैं। सब खाते-पीते घर के हैं। इन्हें नहीं खिलाएंगे, ये अपने घर खा लेंगे। भूखे को तो भोजन कराना ही चाहिए न।''

''पापा जी! बारात में जितने बच्चे आए हैं। सभी ने अपनी थाली को पहले भर लिया। फिर सभी ने थाली में जूठन छोड़ दी। जितनी जूठन सबने छोड़ी है। उसमें तो कितने लोग खाना खा सकते थे।'' सुरेश ने अपने पिताजी से कहा।

सुरेश के पिता ने कहा, ''हर कोई चाहता है कि उसके मेहमानों के लिए भोजन कम न हो। इसलिए पहले मेहमानों को खिलाया जाता है। अगर ऐसे ही सबको खिला देंगे तो मेहमानों के लिए भोजन बचेगा ही नहीं।''

''पापा हमारे स्कूल के सर जी कहते हैं-

'जितना खाना है तुमको,
उतना ही लो थाली में।
खाना बरबाद नहीं करो,
मत फेंको इसे नाली में।''

''सुरेश! तुमने ठीक कहा केवल बच्चे ही नहीं बड़े लोग भी पार्टी या बारात में पहले ही अपनी थाली को भर लेते हैं। बाद में उन्हें जो अच्छा नहीं लगता है। उसे नाली में फेंक देते हैं। मैं तो कहता हूं। हमें अपनी थाली में पहले थोड़ा-थोड़ा लेना चाहिए। उसके बाद जो पकवान अच्छे लगें उन्हें दोबारा ले सकते हैं।''

'' पापा! आप और मम्मी दोपहर की गरमी यानी लू में भी खेत में काम करते हैं। आप कड़क ठंड में भी रात को जंगली जानवरों से फसल को बचाने के लिए खेत में मचान बनाकर रहते हैं। अनाज उगाने में बहुत ही श्रम व पैसा लगता है। यानी अन्न के एक-एक दाने का मोल है। लोग इस अन्न को यूं ही नाली में फेंक देते हैं। पापा! सच में मुझे भी अन्न की बरबादी करने वाले लोग पसंद नहीं हैं।'' सुरेश ने कहा।

''ये तो तुमने ठीक कहा। अभी तुमने देखा। इन बच्चों को दिन में एक बार भी भरपेट भोजन नहीं मिलता है। दुनिया में कई लोग रात को बगैर खाए भूखे पेट सोते हैं। कुछ तो भूख से तड़फ-तड़फ कर मर जाते हैं। तुमको पता है। यदि इस बारात की रसोई में भोजन बच जाएगा। उस भोजन को ठेकेदार के आदमी या तो नाली में फेंक देते हैं। या गड्ढा खोदकर उसमें दबा जाते हैं। उनके पास दूसरों को देने का समय तक नहीं होता है। ठेकेदार के आदमियों को दूसरी बारात के लिए जाना होता है।'' सुरेश के पापा ने कहा।

पापा की बात का उत्तर देते हुए सुरेश ने कहा, ''ओह! यह तो बहुत बरबादी है। इन्हें भी अधिक भोजन नहीं बनाना चाहिए।''

''आजकल सब दिखावा कर रहे हैं। एक की पार्टी में 30 प्रकार के व्यंजन बने थे। दूसरे लोग 40 प्रकार का भोजन बनाकर अपने को महान सिद्ध करने की होड़ मची हुई है।'' पापा ने कहा।

''पापा! मेरी शादी में केवल चार-पांच आइटम ही बनाइएगा।'' कहकर सुरेश अपने आप खिलखिलाने लगा। सुरेश के पापा ने ''वाह'' कहकर उसे अपने गोद में उठा लिया।

सुरेश और सुरेश के पिताजी की बातें आपको कैसी लगी। अपने विचार लिखकर भेजिएगा। आपके विचारों को हम आपके नाम से बालप्रहरी में प्रकाशित करेंगे। आप बालप्रहरी के लिए अपनी मौलिक ड्राइंग, कविता, यात्रा वृत्तांत आदि निःशुल्क प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। बालप्रहरी द्वारा लगभग प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे के बीच ऑनलाइन कार्यशाला की जाती है। इस कार्यशाला का संचालन बच्चे करते हैं। अध्यक्ष व विशिष्ट अतिथि भी बच्चे होते हैं। आप भी बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशाला से जुड़कर अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। बालप्रहरी से ऑनलाइन जुड़ने या कविता व फोटो आदि भेजने के लिए आप मोबाइल नंबर 9412162950 या वाट्सअप नंबर 7088394370 पर संपर्क कर सकते हैं। तुम्हारे पत्र व फोन की प्रतीक्षा करूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
उदय किरौला

बालप्रहरी पत्रिका आज ही डाक से प्राप्त हुई है। मुझे बालप्रहरी पढ़ने में मजा आता है। इसमें छपी कहानी व कविता तथा चुटकुले मुझे अच्छे लगते हैं। जब कभी मैं बोर हो जाता हूं तो मैं बालप्रहरी से चुटकुले पढ़ लेता हूं। जिससे मेरा मन प्रशन्न हो जाता है। बालप्रहरी पत्रिका से कई ज्ञानवर्धक बातें पता चलती हैं।

मैं बालप्रहरी पत्रिका द्वारा प्रतिदिन सायं 7 बजे आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में जुड़ता हूं। मुझे मेरे ताऊ श्री सुरेश देवतला जो कि राजकीय जूनियर हाईस्कूल डांग में शिक्षक हैं। उन्होंने बालप्रहरी पटल के बारे में जानकारी दी। मुझे बालप्रहरी पटल पर अभी तक 15 बार संचालन करने का अवसर मिल चुका है। इस पटल पर बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। इस पटल पर अध्यक्ष तथा विशिष्ट अतिथि बतौर भी मैं अपने विचार रखता हूं।

- प्रभास देवतला, कक्षा 2

★

बालप्रहरी पत्रिका का अक्टूबर-दिसंबर, 2025 अंक पहली बार देखा। इसकी कहानियां व कविताएं अच्छी लगी। पत्रिका में गढ़वाली कविता पढ़कर बहुत खुशी हुई। कुमाउनी सीखने के लिए 'पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल' भी अच्छा है। मुझे पत्रिका में सबसे अच्छा 'बोलो देवी दा' और 'ऐसा क्यों होता है' लगा है। सूडोक, पहेलियां, खोजबीन आदि भी अच्छे लगे। पत्रिका में बच्चों की कविता व कहानियां छपी हैं। मैं भी अपनी कहानी व ड्राइंग भेज रही हूं ।

-तन्वी थपलियाल, कक्षा 8
हिमालयन एकेडमी देहरादून

आपके पत्र

बालप्रहरी का अक्टूबर-दिसंबर,2025 अंक मेरे स्कूल में डाक से मुझे मिला। मेरे सभी सहपाठी मेरी कविता व ड्राइंग देखने लगे। सबने मेरी तारीफ की है। बालप्रहरी में प्रकाशित लेख व कहानी हम बच्चों के लिए बहुत उपयोगी हैं। मुझे विशेष रूप से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बिशनी देवी पर लेख अच्छा लगा। मैं बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं से भी जुड़ती हूं। अपने विचारों को सभी के सामने रखने के लिए बालप्रहरी बहुत अच्छा मंच है। बालप्रहरी परिवार का आभार।

- दृश्या कोहली, कक्षा 5
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल बागेश्वर

★

बालप्रहरी पत्रिका का नया अंक मिल चुका है। इसमें बच्चों के लिए मजेदार कहानी व कविता छपती हैं। इसमें पहेलियां भी छपती हैं। इन पहेलियों को हल करने का मैं प्रयास करती हूं। बालप्रहरी पत्रिका में जब मेरी फोटो, कविता व ड्राइंग छपती है। मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं अल्मोड़ा में बालप्रहरी की 5 दिन की कार्यशाला में भी प्रतिभाग करती हूं। बालप्रहरी की ऑनलाईन कार्यशाला में भी मैं प्रतिभाग करती हूं। ऑनलाइन कार्यशाला में मेरा भाई व कई दोस्त भी जुड़ते हैं। बालप्रहरी पत्रिका के अगले अंक के लिए मैं अपनी कविता भेज रही हूं। कृपया उसे जरूर छापिएगा।

-हिमानी गुसाई, कक्षा 8
सरस्वती शिशु विद्या मंदिर ताकुला,अल्मोड़ा

★

बालप्रहरी पत्रिका आज ही मिली है। मेरी कविता छापने के लिए आभार। मैं अपनी दूसरी कविता व फोटो भेज रही हूं। कृपया छाप दीजिएगा।

-रोशनी कुमारी, कक्षा 4
सनराइज पब्लिक स्कूल दरभंगा, बिहार

बालप्रहरी कार्यशाला

मैंने बालप्रहरी पत्रिका को पहली बार देखा। आप सभी को मैं बालप्रहरी के अपने अनुभव बताना चाहती हूं। हमारे स्कूल में जब मुझे पता चला कि यहां रचनात्मक लेखन कार्यशाला होने वाली है। मैं बहुत खुश हुई। मैं बहुत उत्साहित थी कि हमें कार्यशाला में क्या सिखाया जाएगा। इस कार्यशाला में अल्मोड़ा से बालप्रहरी के संपादक उदय किरौला जी आए थे। 5 दिन की कार्यशाला में हमने कविता बनाना, कहानी लिखना तो सीखा ही रोज हमें नए-नए खेल कराए गए। हमने अपनी-अपनी कविता स्वयं तैयार की। कार्यशाला में प्रत्येक बच्चे ने अपनी हस्तलिखित पुस्तक तैयार की। समापन समारोह में कार्यशाला में तैयार नुक्कड़ नाटक भी बच्चों ने प्रस्तुत किया। बाल कवि सम्मेलन में हमने अपनी कविताएं भी सुनाई। इस कार्यशाला में हमें अपनी भावनाओं व विशेषताएं दिखाने का अवसर मिला। कार्यशाला के बाद जाड़ों की छुट्टी में मैं अपने घर से बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशाला में भी जुड़ी। उस दिन हमारी प्रधानाचार्या आदरणीय डॉ. दीपा जोशी जी मुख्य अतिथि थी। मुझे बहुत अच्छा लगा। अब मैं बालप्रहरी के लिए समय-समय पर अपनी कविता भेजूंगी।

- उन्नति परिहार, कक्षा 6
पी.एम.श्री जवाहर नवोदय विद्यालय
गंगरकोट, सुयालबाड़ी, नैनीताल

अल्मोड़ा : मेरा सपना

मुझे अपना अल्मोड़ा बहुत अच्छा लगता है। यहां की बाल मिठाई बहुत प्रसिद्ध है। मेरा सपना है कि अल्मोड़ा में बिल्कुल भी गंदगी न हो। हमेशा साफ-सफाई रहे। यहां बंदर कम से कम हों, ऐसा मैं चाहती हूं।

- भार्गवी जोशी, कक्षा 4
सी.एम.मैमोरियल स्कूल अल्मोड़ा

बालसाहित्यकार : इंदिरा गौड़



इंदिरा गौड़ का जन्म 19 दिसंबर,1943 को मथुरा,उ.प्र. में हुआ। 'सात समंदर पार' तथा 'मिट्ठू मियां' दो बालगीत संकलन के साथ ही उनकी 4 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, चित्रा प्रकाशन अकोला (चित्तौड़गढ़), अखिल भारतीय पत्रकार संघ सहारनपुर तथा समन्वय संस्था सहारनपुर सहित देश की कई प्रतिष्ठित संस्थाओं से वे सम्मानित हुई हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं का प्रकाशन हुआ है। 26 दिसंबर, 2019 को उनका निंधन हो गया। बालसाहित्य के लिए समर्पित रचनाकार को शत-शत नमन! यहां उनकी कुछ रचनाएं दी जा रही हैं। -संपादक

प्यारी चिड़िया

प्यारी प्यारी चिड़िया सुन,
बोल कहां है तेरा घर।
मुझको तो लगती है तू,
अपनी सगी सहेली सी।
रोज-रोज छत पर आती,
पर अनबूझ पहेली सी।
मुझको देख उड़न छू क्यों,
क्या लगता है मुझसे डर।
कितना अच्छा होता जो,
मैं भी चिड़िया हो जाती।
जाकर पार बादलों के,
चांद सितारे छू आती।
अपना फ्राक तूझे देती,
तुझसे लेती तेरे पर।

नवाब

कितने अच्छे लगते हैं मां,
काले पीले लाल गुलाब।
मन होता है खिलूं फूल सा,
बगिया-बगिया सैर करूं।
बंता, राम, रहीम, सैमसन,
नहीं किसी से बैर करूं।
जो भी मांगे उसको दे दूं,
चित्रों वाली नई किताब।
भाता नहीं मुझे जाने क्यों,
केवल पढ़ते ही रहना।
जब सिर दुखे, शुरू हो जाए,
आंखों से पानी बहना।
इतना पढ़कर भी क्या होगा,
मुझको बनना नहीं नवाब।

सूरज दादा

तुम बिन चले न जग का काम,
सूरज दादा राम-राम।
लादे हुए धूप की गठरी,
चले रात भर पटरी पटरी।
मां खाने को रखती होगी,
शक्कर पारे लड्डू मठरी।
तुम मंजिल पर ही दम लेते,
करते नहीं तनिक आराम।
तुम बिन चले जग का काम,
सूरज दादा राम-राम।
कभी नहीं करते हो देरी,
दिन भर रोज लगाते फेरी।
मुफ्त बांटते धूप सभी को,
कभी न करते तेरा मेरी।
कांधे गठरी धर चल देते,
सांझ हाथ जब लेती थाम।
तुम बिन चले न जग का काम,
सूरज दादा राम-राम।
चाहे गरमी हो या जाड़ा,
तुम्हें जमाना रोज अखाड़ा।
बोर कभी तो होते होगे,
रटते-रटते वहीं पहाड़ा।
सब कुछ गड़बड़ कर देते हैं,
बादल करके चक्का जाम।
तुम बिन चले न जग का काम,
सूरज दादा राम-राम।

भालू भाई

भालू भाई-भालू भाई,
मिला नहीं क्या कोई नाई।
इतने बाल लिए फिरते,
इतनी भारी गरमी में।
समय नहीं मिल पाया या,
बढ़ा लिए हठधर्मी में।
जाकर बाल कटा आओ तुम,
चेहरे पर मनहूसी छाई।
रोज नहाकर साबुन से,
थोड़े गोरे हो जाओ।
पास नहीं जो साबुन तो,
आकर मुझसे ले जाओ।
फिर देखो सूरत शीशे में,
बारह से बज जाएं ढाई।

मां

कितनी अच्छी होती मां।
सुबह स्कूल के लिए जगाती,
फिर घर भर को चाय पिलाती।
जब सब हो जाते तैयार,
वह हम सबके टिफिन लगाती।
भेज सभी को बाहर, सबके,
मैले कपड़े धोती मां।
कितनी अच्छी होती मां।
फिर सारे घर को चमकाती,
जा बाजार सब्जियां लाती।
करते-करते घर का काम,
धीमे स्वर में कुछ-कुछ गाती।
सबसे पहले जग जाती,
सबसे पीछे सोती मां।

प्रस्तुति : नीरज पंत, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, मुहल्ला मकीड़ी, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

बादल

धरती की प्यास बुझाने देखो,
बादल आए बादल आए।
आसमान में दौड़ लगाते,
साथ में देखो वर्षा लाए।
बरसात में बरसते जब,
बाढ़ नदी नालों में लाते।
चहुं ओर हरियाली होती,
बादल सबके मन को भाते।

-यशस्वी जोशी, कक्षा 7
मालविका जूनियर हाईस्कूल अल्मोड़ा

कूड़ादान

कूड़ेदान हूं कूड़ेदान,
कूड़े का मुझमें दान करो।
साफ सफाई रखनी है,
मुझे देख कर गौर करो।
बीमारी से यदि बचना है,
कचरा नहीं फैलाना है।
सभी बदलें अपनी आदत,
सबको ये बताना है।

-दक्षिता त्रिपाठी, कक्षा 8
हरमन माइनर भीमताल, नैनीताल

टमाटर



लाल टमाटर लाल टमाटर,
सबके मन को भाते हैं।
सब्जी का स्वाद बढ़ाता,
सलाद में इसे खाते हैं।
बाजार में मिलता है यह,
घर में भी इसको उगाते।
जो बेचते बाजार में इसे,
वे पैसा बहुत कमाते।

-नव्या परिहार, कक्षा 5
बाल विद्या सदन वज्यूला, बागेश्वर

मेरा गांव

सोंदी मिट्टी की खुशबू,
मेरे गांव की पहचान है।
जिस गांव में जन्म लिया,
उस गांव का मुझे अभिमान है।
मत पूछो वहां कैसे होती,
सावन की हरियाली।
सुबह सुबह दिखती जहां,
सुनहरी सूरज की लाली।
नदिया झरने पहाड़,
खेतों में लहराती गेहूं की बाली।
है मेरा गांव जहां,
चहुं ओर दिखती है हरियाली।

-रोशनी आर्या, कक्षा 6
राजकीय बालिका इंटर कालेज अल्मोड़ा

भारत देश महान



भारत में सब मिलकर रहते,
हिंदू मुस्लिम सिख इसाई।
न हो कभी वैर इनमें,
मिलकर रहें सभी भाई।
देश हमारा आगे बढ़ेगा,
नहीं होगा जब वैर।
सभी मिलकर रहें यहां पर,
यहां नहीं कोई है गैर।

-मानस धौनी, कक्षा 7
राजकीय जूनियर हाईस्कूल भैंरू चौबट्टा, बागेश्वर

मुझे शिक्षकों से कहना है

मुझे शिक्षकों से कहना है कि सभी छात्रों को मंच मिलना चाहिए। जब कहीं कोई प्रतियोगिता होती है। तब शिक्षक कुछ गिने-चुने बच्चों को ही अवसर देते हैं। मुझे शिक्षकों से यह भी कहना है कि कक्षा में पढ़ाते समय वह सभी बच्चों से सवाल करें। होता ये है कि शिक्षक हमेशा कुछ बच्चों से ही पूछते हैं। जबकि उन सवालों का जबाब दूसरे बच्चे भी दे सकते हैं। दूसरे बच्चों को भी आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

मुझे शिक्षकों से यह भी कहना है कि शिक्षकों को कभी भी बच्चों से भेदभाव नहीं करना चाहिए। सभी बच्चे होशियार नहीं होते हैं। कमजोर बच्चे को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए। कुछ बच्चे लिखने में गड़बड़ी करते हैं। शुद्ध नहीं लिख पाते हैं। शुद्ध लिखने के लिए भी बच्चों को तैयार किया जाना चाहिए।

कुछ स्कूलों में महीने में एक दिन 'बैग लैस डे' होता है। इस दिन बच्चों को अन्य गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलता है। बच्चे खेल-खेल में भी काफी कुछ सीखते हैं। इसलिए स्कूल में समय-समय पर बच्चों को खेल करने की सुविधा दी जानी चाहिए। ये बातें मैं अपने स्कूल के लिए नहीं कह रही हूं। प्रायः ये बातें बहुत से विद्यालयों में देखने को मिलती हैं। कुछ स्कूलों में टॉपर बच्चों को आगे बैठाया जाता है। कमजोर बच्चों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। कोई पढ़ाई में अच्छा होगा। कोई संगीत या खेल में। सभी को अवसर दिया जाना चाहिए।

- ईशिका जोशी, कक्षा-9
विवेकानंद इंटर कालेज अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

हाथी

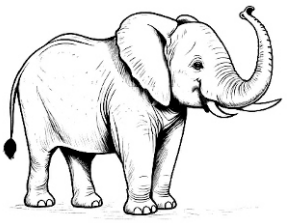

मोटा तगड़ा हाथी देख,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
कुछ बच्चे तो इसे देखकर,
जल्दी से रो जाते हैं।
सबसे बड़ा जानवर है ये,
शरीर है इसका भारी।
बच्चे खुश हो जाते जब,
करते हैं इसकी सवारी।

-तानिया पांडे, कक्षा 5
बाल विद्या सदन, वज्यूला, बागेश्वर

हरी सब्जी

मेथी पालक धनिया खाओ,
ये हैं ताकत के भंडार।
हरी सब्जी रोज तुम खाओ,
मेरी बात का ये है सार।
बीमारी से बचना है तो,
सब्जियां सबको खानी होंगी।
नहीं खाते जो हरी सब्जी,
उन्हें भी बात बतानी होंगी।

-हिमांशी भंडारी, कक्षा 6
बाल विद्या भवन वज्यूला, बागेश्वर

मेरा गांव

मेरा गांव है सबसे प्यारा,
मंद गति से हवा मचलती।
सुबह-सुबह रोज चिड़िया,
मेरे आंगन में फुदकती।
हरे भरे खेतों में देखो,
छाई है हरियाली।
बंदर का आतंक यहां,
ऊधम मचाए डाली डाली।

-विजय जोशी, कक्षा 6
डी.ए.वी. लोहाघाट, चंपावत

मेरा गांव

मेरे गांव का नाम दिगोटी है। जो कि टिहरी जिले के गजा क्षेत्र में स्थित है। यह गांव विकास खंड चंबा में स्थित है। यहां लगभग 70-80 परिवार निवास करते हैं। हमारे गांव की प्रधान का नाम सोनम नेगी है। गांव में पानी, बिजली व सड़क की सुविधा है। गांव में प्राथमिक तथा जूनियर दो स्कूल हैं। गांव में एक मंदिर है। जिसके ठीक बगल में पंचायत भवन है। इस पंचायत भवन में गांव के लोगों की मीटिंग होती है। गांव के बच्चे छुट्टी के दिन क्रिकेट और दूसरे खेल खेलते हैं। आजकल तो अधिकतर बच्चे मोबाइल पर ही लगे रहते हैं। पर सभी बच्चों को मोबाइल नहीं थमाते हैं।

मेरे गांव के चारों ओर पहाड़ हैं। गांव में लगभग सभी परिवारों के अपने-अपने खेत हैं। जिसमें समय-समय पर अलग-अलग अनाज उगाते हैं। खेती में सब एक दूसरे का हाथ बंटाते हैं।

मेरे गांव में सोलर लाइट्स लगी हुई है। जिससे रात को भी गांव में उजाला रहता है। अधिकतर लोगों ने अपने घर में शौचालय बनाए हुए हैं। शादी-विवाह या त्यौहार के दिन गांव से बाहर रह रहे लोग भी गांव आते हैं। गांव की पूजा में भी सब लोग एकजुट होकर पूजा करते हैं। प्रसाद भी सभी लोग आपस में मिलकर बनाते हैं।

- अंशिका नेगी,कक्षा 8
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दिगोठी, टिहरी

मेरी दीदी

मेरी दीदी शानू दीदी,
मुझको रोज पढ़ाती।
नहीं झगड़ती मुझसे वह,
मुझको रोज खिलाती।
खेलती है मेरे संग,
काम की बातें बताती।
होमवर्क में मदद करे,
कभी नहीं मुझे सताती।

-दृश्या कोहली, कक्षा 5
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल बागेश्वर

विवेकानंद



विवेकानंद ऐसे थे महान,
जिनकी अपनी अलग पहचान।
अपने भाषण से उन्होंने,
सारे विश्व को दिया था ज्ञान।
देश प्रेम का दिया संदेश,
मानवता का पाठ पढ़ाया।
सद्मार्ग पर चलें सभी,
सेवा भाव का मार्ग समझाया।

-तनूजा तिवारी, कक्षा 8
राजकीय बालिका इंटर कालेज अल्मोड़ा

हाथी

हाथी राजा बड़े बड़े,
सब बच्चों को भाते हैं।
टी. वी. में हाथी देखकर,
बचपन में खाना खाते हैं।

-रूद्रांशी तिवारी,
आंगनबाड़ी केंद्र पनुवाद्योखन,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

पुस्तक



मेरी पुस्तक सबसे प्यारी,
सबके मन को भाती है।
पुस्तक से जो प्यार करे,
उसका मान बढ़ाती है।
नाता जोड़ो पुस्तक से,
जीवन सफल हो जाएगा।
समय के साथ जो चले,
वही सफल हो पाएगा।
पुस्तकों का घर है जो,
पुस्तकालय कहलाता है।
पुस्तक से जो दोस्ती करे,
महान वहीं कहलाता है।

-रेनू, कक्षा 7
राजकीय इंटर कालेज मंडलसेरा, बागेश्वर

बम पटाखे

बम पटाखे जलाने से हम लोग खुश तो होते हैं। पर आपको पता है बम पटाखे बहुत खतरनाक होते हैं। इनसे हमारा हाथ भी जल सकता है। घर के आस-पास रखी घास जल सकती है। कच्चे मकान भी जल सकते हैं। पटाखों से निकलने वाला धुंआ बहुत खतरनाक होता है। इससे कई बीमारियां होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए हमें पटाखों से दूर रहना चाहिए। इन्हें बाजार से भी नहीं खरीदना चाहिए। दूसरे लोगों को पटाखों के नुकसान के बारे में भी बताना चाहिए।

-जूही सिंह , कक्षा 7
पी.एम.श्री केंद्रीय विद्यालय अल्मोड़ा

एक दिन की बात

मेरे बचपन की बात है। मेरा मन गंगा घाट पर नहाने को कर रहा था। मैं अपने घर से गंगा घाट की ओर निकल पड़ा। नहाते समय मैंने नजदीक में एक नाव देखी। मेरा मन नाव पर चढ़ने को हुआ। मैं आधा नहाने में ही नाव पर चढ़ गया। अचानक नाव चलने लगी। मैं नाव से गिर गया। एक आदमी ने मुझे गिरते हुए देख लिया। मेरा सिर लोहे से फट गया था। उस आदमी ने मेरे सिर को कपड़े से बांधा। वह आदमी मुझे नजदीक में डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर ने मेरे सिर पर पट्टी बांध दी। उसके बाद वह आदमी मुझे मेरे घर पर छोड़ गया। उस आदमी ने पूरी कहानी मेरे मम्मी-पापा को बताई। उस दिन के बाद मैं कभी भी शरारत करने से पहले कुछ सोच लेता हूं।

- अमन, कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय डालपुरी, हरिद्वार

फूल

रंग बिरंगे प्यारे फूल,
पूजा के काम आते हैं।
फूलों को देखकर ही,
बच्चे खुश हो जाते हैं।

-मानवी जोशी, कक्षा 2
गागरीगोल, बागेश्वर

समोसा

मैदा आलू से बनता,
लगता सबको अच्छा,
समोसा सबको भाता है,
बड़ा, बूढ़ा हो या बच्चा।

-धार्मिक तिवारी, कक्षा 3
राजकीय प्राथमिक विद्यालय पनुवाद्योखन,अल्मोड़ा

बेटी पढ़ेगी

पढ़ने दो बेटी को,
शिक्षा का दो उसे अधिकार।
गांव शहर देश सुधरेगा,
सीखेगी वह अच्छे संस्कार।
छोटी सी नन्हीं गुड़िया,
देश को आगे बढ़ाएगी।
पिता और पति के घर की,
हर दम शान बढ़ाएगी।

-रश्मि जोशी, कक्षा 6
रामगंगा वैली हाईस्कूल रामनगर, नैनीताल

फूल



घर आंगन की शोभा फूल,
ये घर आंगन महकाते हैं।
फूलों की सुगंध पाकर,
तितली भौरे आते हैं।
पर्यावरण यदि बचाना है,
पेड़ और फूल लगाएं।
घर हमारा साफ रहे,
घर आंगन को महकाएं।
घर आंगन की शोभा ये,
कभी न तोड़ो फूल।
फूलों का अपना संसार,
सभी लगाओ घर में फूल।

-उन्नति परिहार, कक्षा 6
पी.एम.श्री जवाहर नवोदय विद्यालय गंगरकोट,
सुयालबाड़ी, नैनीताल

जाड़ा

गरमी गई आ गया है जाड़ा,
निकल गई जाड़े की वर्दी।
टोपी, बनियाल निकल गए,
सुबह शाम बढ़ गई है सर्दी।

-जितिका नेगी, कक्षा 1
वीर शिवा पब्लिक स्कूल चौखुटिया,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

हमारा स्कूल

मैं जवाहर नवोदय विद्यालय की छात्रा हूं। मैं कक्षा 7 में पढ़ती हूं। मुझे यहां रहते हुए एक साल हो गया है। एक साल में मैंने यहां बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ सीखा है। जब मैं इस छात्रावास में पहली बार आई। तब मैं बोर हुई। काफी अकेलापन महसूस होता था। अब मेरे यहां काफी दोस्त बन चुके हैं। अब मुझे यहां बहुत अच्छा लगता है।

हमारे स्कूल में सभी बच्चे छात्रावास में रहते हैं। यहां पर 11 छात्रावास हैं। जिनमें से 7 छात्रावास लड़कों के लिए हैं। जबकि 4 छात्रावास लड़कियों के लिए हैं। मैं अरावली सदन में रहती हूं। हमारे सदन की अधीक्षिका स्वाति गुंजियाल जी हैं। वह हमारा बहुत ध्यान रखती हैं। वह हमारे ही सदन में रहती हैं। कभी यदि हमें अपने घर बात करनी होती है। तब वे अपने फोन से हमारे घर बात भी करवा देती हैं। हमारे सदन में टी.वी. भी लगा है। हम खाली समय में टेलीविजन भी देखते हैं। स्कूल की ओर से हम समय-समय पर भ्रमण पर जाते हैं । इससे हमें दूसरे स्थान की जानकारी भी होती है। इस भ्रमण में भी हमें काफी कुछ सीखने को मिलता है। हमारे स्कूल में समय-समय पर संगीत आदि प्रशिक्षण भी होते हैं।

वर्तमान में डॉ. दीपा जोशी जी हमारे स्कूल की प्रधानाचार्या हैं। वे सभी बच्चों को प्यार करती हैं। उनके दुख तकलीफ पूछती हैं। यहां के सारे सर व मैडम भी अच्छे हैं। हमारे सदन की सभी लड़कियां सफाई का ध्यान रखती हैं।

- हिमाक्षी मेहरा, कक्षा 7
पी.एम.श्री जवाहर नवोदय विद्यालय गंगरकोट, सुयालबाड़ी, नैनीताल

स्वस्थ जीवन

स्वस्थ रहना है यदि,
जानें जरूरी बात।
भोजन करने से पहले,
धोने हैं अपने हाथ।
फास्ट फूड अब नहीं चलेगा,
घर का भोजन खाओ।
मौसमी फल खाकर तुम,
खूब तंदुरूस्त हो जाओ।

- तानिया गैड़ा, कक्षा 7
राजकीय कन्या जूनियर हाईस्कूल खोला, अल्मोड़ा

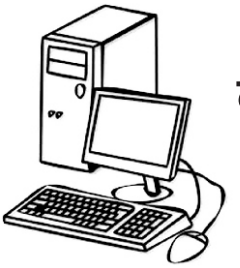

कंप्यूटर

कंप्यूटर आया जब से भाई
सबका काम आसान बनाया।
छोटा सा माऊस है इसमें,
एक हाथ से इसे चलाया।
गीत व संगीत की बातें,
जो भी चाहो हमें बताता।
बिजली यदि चले जाए,
तब हमें यह बहुत सताता।

-अजय जोशी, कक्षा 6
डी.ए.वी. लोहाघाट, चंपावत

बरबादी

भोजन की कीमत को समझो,
समझो तुम भोजन का मोल।
बहुत मेहनत करता किसान,
भोजन तो है बहुत अनमोल।
बरबादी न हो भोजन की,
ऐसा तुम कुछ जतन करो।
जितना तुमको खाना है,
थाली में उतना ही भरो।

- अंकित नायक, कक्षा 8
वीर शिवा पब्लिक स्कूल चौखुटिया, अल्मोड़ा

मेरा गांव

मेरा नाम श्रुति है। मेरे गांव का नाम बिगराड़ी है। यह उत्तरकाशी जिले में बड़कोट के निकट बनाल में स्थित है। हमारे गांव के आसपास करनाली, इड़क, पुजेली, गैर, गडोली, कांडा, डेल्डा, डखेट तथा गुलाड़ी आदि गांव है। मेरा गांव पहाड़ में स्थित है। यहां की भाषा रवांल्टी है। हमारा परिवार बहुत बड़ा है। मेरे परिवार में 14 सदस्य हैं। सारे गांव में लोग त्यौहार के दिन गांव आते हैं। त्यौहार को मिलकर मनाते हैं। त्यौहार के दिन हमारे गांव में भरी पूरी,सीड़े,अस्के तथा अरसे बनाए जाते हैं। इन पकवानों को सब लोग पसंद करते हैं।

गांव में सेब के बगीचे हैं। अखरोट व अन्य फल भी हमारे गांव में होते हैं। आलू,प्याज, टमाटर, कुचाई, राई आदि उगाया जाता है। बरसात में लौकी, कद्दू व अन्य बेल वाली सब्जियां भी लोग उगाते हैं।

हमारे गांव में अभी भी प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल बहुत किया जाता है। जैसे कि घर बनाने में लकड़ी आदि। खाना चूल्हे में बनाया जाता है। पानी गरम करने व आग सेकने के लिए भी गांव में लोग आग जलाते हैं।

- श्रुति, कक्षा 8
पी.एम.श्री जवाहर नवोदय विद्यालय धुनगिर, पुरोला, उत्तरकाशी

बादल

बादल राजा बादल राजा,
पानी कहां से लाते हो।
रोज नहीं आसमान में दिखते,
कहां तुम चले जाते हो।

-वैदेही पांडे, कक्षा 3
सेंट फ्रांसिस कांवेंट स्कूल बरेली,उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

गांव



चलो गांव की ओर,
गांव हमें बुलाते हैं।
गांव की मीठी-मीठी यादें,
लहराते खेतों की बातें।
दादा की वो खेती-किसानी,
दादी की परियों की कहानी।
नौलौं का वो शीतल जल,
नदियां करती कल-कल-कल।
गांव की वो पाठशाला,
मवेशियों संग जाना ग्वाला।
चलो गांव की ओर,
गांव हमें बुलाते हैं।

- कृतिका बिष्ट, कक्षा 11
राजकीय इंटर कालेज नाई, अल्मोड़ा

बच्चे



मेरे स्कूल के सारे बच्चे,
अनुशासन में रहते हैं।
बच्चे हैं देश का गौरव,
हमारे सर जी कहते हैं।
ऊधम खूब मचाते बच्चे,
ये हैं भारत देश की शान।
सफल हो जाते बच्चे जो,
रखते वे स्कूल का मान।

-ध्रुव, कक्षा 8
राजीव गांधी नवोदय विद्यालय गैरसैण, चमोली

जब मुझे गुस्सा आता है

मुझे गुस्सा बहुत आता है। जब मुझे गुस्सा आता है। तब में बरतन फेंक देता हूं। रोने लगता हूं। तब मैं खाना भी नहीं खाता हूं। मेरे गाल लाल हो जाते हैं। मेरा मन स्कूल जाने को भी नहीं करता हैं। परंतु मेरे मम्मी पापा मुझे मना लेते हैं। पता है पापा कुरकुरे देकर मनाते हैं। जब मेरा गुस्सा शांत हो जाता है। मुझे उस समय अपने गुस्से के बारे में बुरा लगता है। पर मैं अपनी आदत से मजबूर हूं।

मेरी मां समझाती है कि गुस्सा करना ठीक नहीं। इससे अपना ही नुकसान होता है। दूसरे लोग मजाक बनाते हैं। सच में गुस्सा करना ठीक नहीं है।

- हर्षित कठायत,कक्षा 6 बोधि ट्री स्कूल अल्मोड़ा

मेरा स्कूल

आर्य कन्या इंटर कालेज,
स्कूल मेरा है प्यारा।
अच्छी होती पढ़ाई यहां,
अच्छा माहौल है सारा।
खुश हैं सारे बच्चे,
स्कूल में होते खेल।
पढ़ाई पर सब देते ध्यान,
आपस में सबका मेल।

-शिवानी चौहान,कक्षा 7
आर्य कन्या इंटर कालेज अल्मोड़ा

मेरा स्कूल

मेरे स्कूल का नाम राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय थौलधार है। यह जनपद टिहरी में स्थित है। मेरे स्कूल में 5 शिक्षक हैं। मुझे अपने स्कूल के सारे शिक्षक अच्छे लगते हैं। हमारे स्कूल में खेल का मैदान भी है। जिसमें हम खेलते हैं। स्कूल में बच्चों के माता-पिता को भी बुलाया जाता है।

हमारे सर जी हमें समय-समय पर खेल भी कराते हैं। स्कूल में लगे फूल व गमले मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। पेड़ व फूल लगाने से पर्यावरण साफ रहता है। बच्चों को दोपहर का भोजन भी मिलता है। हमारे सर जी कहते हैं कि भोजन करने से पहले हाथ धोना जरूरी है। हमारे स्कूल की एक पत्रिका 'फ्यूली' निकलती है। जिसमें बच्चों की फोटो भी होती है।

- आयुष नेगी,कक्षा 5
रा.आ.प्राथमिक विद्यालय थौलधार, टिहरी

तितली



तितली रानी तितली रानी,
सब बच्चों को भाती है।
चाहूं इसे पकड़ना मैं,
हाथ नहीं ये आती है।
फूलों का रस पीती है ये,
फूलों पर मंडराती है।
इतने सुंदर पंख हैं इसके,
दूर देश से आती है।

-पावनी धामी, कक्षा 8
राजकीय उत्कृष्ट रा.इ.का.डीडीहाट, पिथौरागढ़

टॉफी

मिट्ठी खट्टी और रसीली,
मजेदार होती है टॉफी।
अलग-अलग रंगों में आती,
सब बच्चों को भाती टॉफी।

-प्रभास देवतला ,कक्षा 2
वीर शिवा पब्लिक स्कूल चौखुटिया,अल्मोड़ा

गुब्बारे

रंग बिरंगे गुब्बारे लेकर,
गुब्बारे वाला आया है।
बेच रहा है फुला फुलाकर,
गुब्बारा सबको भाया है।

-नमिश जोशी, कक्षा 1
वीर शिवा पब्लिक स्कूल चौखुटिया,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

पटाखे

पटाखे होते खतरनाक,
पर्यावरण खराब करते हैं।
जोर की आवाज करते ये,
कुछ बच्चे तो डरते हैं।
पटाखे कम जलाओगे तो,
पर्यावरण हमारा साफ रहेगा।
पटाखे नहीं जलाएंगे तो,
प्रदूषण भी नहीं रहेगा।

-अभिताभ पाठक ,कक्षा 8
पी.एम.श्री जवाहर नवोदय विद्यालय
दुनगिर, पुरोला, उत्तरकाशी

तितली

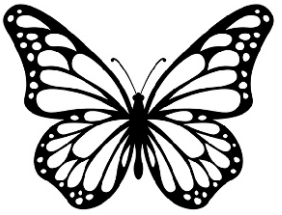

तितली रानी तितली रानी,
फूलों पर मंडराती हो।
चाहूं यदि तुम्हें पकड़ना,
हाथ नहीं तुम आती हो।
पंख तुम्हारे रंग बिरंगे,
किस बाजार से लाती हो।
घूमती रहती इधर-उधर,
स्कूल क्यों नहीं जाती हो।

-भावना आर्या, कक्षा 8
राजकीय जूनियर हाईस्कूल रैथल, बागेश्वर

मेरा गांव

जखोल है मेरा गांव,
होती यहां हरियाली है।
पेड़ पौधे बहुत यहां,
खिलती डाली-डाली है।
बच्चे जाते स्कूल यहां,
शाम को खेलते खेल।
स्कूल से छुट्टी होते ही,
दौड़ लगाते ठेलम ठेल।

-सौरभ सिंह, कक्षा 6
नवोदय विद्यालय पुरोला,उत्तरकाशी

स्वतंत्रता सेनानी : रामसिंह धौनी

सन् 1921 में सर्वप्रथम 'जयहिंद' का नारा देने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रामसिंह धौनी का जन्म 24 फरवरी,1893 को अल्मोड़ा जिले के सालम पट्टी में तल्ला बिनौला गांव में हुआ था। उनकी माता का नाम कुंती देवी तथा पिता का नाम हिम्मत सिंह धौनी था। उन्होंने सन् 1908 में जैंती से कक्षा 4 की उत्तीर्ण करके टाउन स्कूल अल्मोड़ा में कक्षा 5 में प्रवेश लिया। मीडिल में वे पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहे। इसलिए उन्हें प्रतिमाह 5 रुपए छात्रवृत्ति मिलती थी।

स्वतंत्रता आंदोलन के तहत सन् 1912-1913 में कई महापुरूष अल्मोड़ा आए। उन महापुरूषों की बातें सुनकर रामसिंह धौनी के मन में देश प्रेम की भावना जाग्रत हुई। स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने सरकारी नौकरी नहीं करने का संकल्प लिया। सन्! 1919 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री ली। सालम लौटने पर क्षेत्र के पहले ग्रेजुएट बने रामसिंह धौनी जी का लोगों ने ढोल नगाड़ों के साथ स्वागत किया। उनकी शिक्षा को देखते हुए अंगरेजी सरकार ने उन्हें तहसीलदार बनने का प्रस्ताव दिया। जिसे उन्होंने ठुकरा दिया। उसके बाद वे राजस्थान में एक स्कूल में शिक्षक बन गए। बाद में फतेहपुर में वे प्रधानाध्यापक बन गए। उन्होंने आजादी के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए स्थान-स्थान पर कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाया। अल्मोड़ा लौटकर उन्होंने 1925 में शक्ति साप्ताहिक अखबार के संपादक बतौर जिम्मेदारी निभाई। उसके बाद वे मुंबई चले गए। वहां उन्होंने हिमालय पर्वतीय संघ की स्थापना की।

12 नवंबर,1930 को उनका निधंन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद 1942 की जन क्रांति के केंद्र सालम में रामसिंह धौनी आश्रम की स्थापना हुई। आजादी की लड़ाई में उनकी सक्रिय सहभागिता व सामाजिक योगदान को देखते हुए आज भी लोग उनको याद करते हैं। अल्मोड़ा में उनकी मूर्ति लगाई गई है। स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रदूत रामसिंह धौनी को शत-शत नमन!

- कृतिका बिष्ट, कक्षा-8
ज्ञानोदय बाल आदर्श पाठशाला
डीनापानी,अल्मोड़ा

भोजन

किसान उगाता है अनाज,
मेहतन खूब करता है।
अनाज उगाने के लिए,
मेहनत से न डरता है।
भोजन बरबाद न करो,
जूठन न फेंको नाली में।
जितना खाना है तुमको,
उतना ही लो थाली में।

-अंजू कुमारी ,कक्षा 7
राजकीय मध्य विद्यालय सिमरी, दरभंगा, बिहार

कूड़ादान

कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
अपने घर की करें सफाई।
गंदगी की जड़ बीमारी,
बात सभी ये समझो भाई।
इधर-ऊधर न फेंको कूड़ा,
सबको ऐसी बात बताएं।
कूड़ा कूड़ेदान में डालो,
प्यार से सबको ये समझाएं।

-दीपांशु, कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कंडारखाल, टिहरी

बच्चों की कलम से :

घटना

मैं शाम को छुपम-छुपाई खेल रहा था। मैं खेल में एक मचान के नीचे छिप गया। तभी मुझे एक सांप का बच्चा दिखा। मुझे पता नहीं था। वह सांप का बच्चा है। उसका मुंह चूहे के बिल में था। मुझे लगा यह कोई रस्सी है। मैंने उसकी पूंछ पकड़ ली।

मेरी मम्मी ने मुझे देख लिया। मेरी मम्मी ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपनी तरफ खींच लिया। मां के कहने पर धर्मेंद भैया ने उस सांप को पास वाली नहर में छोड़ दिया। जब मां ने मुझे बताया कि यह सांप का बच्चा है। मैं बहुत डर गया। उस दिन से अब मैं बहुत सोच समझकर काम करता हूं।

– अर्जुन, कक्षा-5
नेताजी सुभाषचंद्र बोस छात्रावास लालढांग, हरिद्वार

मेरा गांव

मेरे गांव का नाम बमराड़ी है। यह टिहरी जनपद में स्थित है। मेरा गांव थौलधार विकास खंड में राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय थौलधार के नजदीक है। मेरे गांव में पंचायत घर है। गांव में 32 परिवार रहते हैं। गांव के सभी लोग आपस में प्रेम से रहते हैं। विवाह या अन्य अवसरों पर जो लोग गांव से बाहर रहते हैं। वे भी गांव में आते हैं। मेरे गांव में दो दुकानें, एक स्कूल तथा चार मंदिर हैं। गांव में पानी की 3 टंकियां हैं। गांव में सीढ़ीदार खेत हैं। अधिकतर लोग खेती करते हैं। कुछ लोग पशुपालन भी करते हैं। सभी लोग अपने खाने के लिए सब्जियां भी उगाते हैं। मेरा गांव बहुत सुंदर है। यहां के बच्चे छुट्टी के दिन खेलने के लिए जाते हैं।

– अर्चित, कक्षा-4
राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय थौलधार, टिहरी

बाघ आया



बाघ आया बाघ आया,
उसने सारा गांव डराया।
भौंकता जो जोर से,
कुत्ता उसने पहले खाया।
स्कूल आते-जाते डर,
सबको इसका डर सताया।
खेतों में जाना है मुश्किल,
बाघ आया बाघ आया।

–अनुष्का रावत, कक्षा 8
राजकीय इंटर कालेज मरोड़ा, चमोली

मेरा विद्यालय

मेरे विद्यालय का नाम राजकीय प्राथमिक विद्यालय टांटवाला है। यह हरिद्वार जनपद के बहादराबाद विकास खंड में स्थित है। हमारे स्कूल का गेट सुबह 8 बजे खुल जाता है। मेरे स्कूल में 4 टीचर हैं। हमारे प्रधानाध्यापक जी का नाम श्री योगेश्वर सिंह जी है। हमारी मैम स्वाति जी हमें बहुत सी गतिविधियां कराती हैं। 'सितारे पत्रिका' में हमारे स्कूल के बच्चों की कविता भी छपती है। समानता फाउंटेशन की ओर से हमारे विद्यालय में कई सुविधाएं दी जाती हैं। मुझे अपना स्कूल बहुत अच्छा लगता है। यहां सारे दोस्त मिलकर रहते हैं। हम लोगों को दोपहर में भोजन भी मिलता है। प्रतिदिन स्कूल में खेल भी कराए जाते हैं।

– रैना, कक्षा-5
रा.प्रा.वि.टांटवाला, हरिद्वार

एक दिन की बात

हम लोग क्लास में पढ़ाई कर रहे थे। तभी एक बड़ी दीदी आई। उन्होंने कहा जिनका खो-खो खेल में रूचि है। पिछली बार उनका चयन नहीं हो पाया है। वे मैदान में आ जाएं। पिछले बार जब चयन हुआ था। उस दिन में स्कूल नहीं गया था। इसलिए खो-खो खेल के लिए मैं भी चला गया। शायद मैं अच्छा खेल रहा था। मैम ने खो-खो खेल के लिए मेरा भी चयन कर लिया। मेरे साथ मेरे और तीन दोस्तों का भी चयन हुआ था। मैम ने कहा तुम चारों की दौड़ करवाते हैं। हम चारों की दौड़ कराई गई। दौड़ में मुझे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। मैम ने कहा आप खेल के लिए चयनित हुए हो। मुझे बहुत खुशी हुई। उसके बाद हमने मैदान में खेल का अभ्यास किया। कुछ समय बाद हम क्लास में पढ़ने आ गए। मुझे अलग-अलग खेलों में भाग लेने का शौक है। मैंने सोचा है जब भी कोई प्रतियोगिता होगी। मैं उसमें जरूर प्रतिभाग करूंगा।

– वत्सल पंत, कक्षा-6
कोलंबस पब्लिक स्कूल रुद्रपुर, ऊधमसिंहनगर



तितली

तितली रानी तितली रानी,
फूलों पर मंडराती हो।
केवल लेती फूलों का रस,
और क्या-क्या खाती हो।
मैं भी यदि तितली होती,
दूर-दूर तक जाती।
होम वर्क की होती छुट्टी,
रोज ही सैर कर आती।

–पलक, कक्षा 6
जवाहर नवोदय विद्यालय सुयालबाड़ी, नैनीताल

बच्चों की कलम से :

पेड़



पेड़ करते हम पर उपकार,
हमको पेड़ लगाने होंगे।
पेड़ जीवन के हैं आधार,
पेड़ के लाभ बताने होंगे।
जितने पेड़ लगाए अब तक,
उन सबको बचाना है।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ,
अभियान ये चलाना है।

-पुष्कर चौहान,कक्षा 6
पी.एम.श्री जवाहर नवोदय विद्यालय
धुनगिर, पुरोला, उत्तरकाशी

स्वच्छता

साफ रहे घर-आंगन सब,
हम स्वच्छता का दें संदेश।
बाहर से आकर धो लें हाथ,
तब दूजे को दें उपदेश।
कूड़ा करकट नहीं फेंकना,
इससे गंदगी फैलती है।
मच्छर बीमारी को फैलाएं,
इससे सबकी आफत रहती है।
सूखा कूड़ा अलग रखें और,
गीले को दूर ही रखना है।
समय समय पर करें सफाई,
इससे मच्छर नहीं पनपता है।
घूमने जाएं यदि कहीं तो,
कूड़ा इधर-उधर नहीं फेंकना।
सही जगह पर कूड़ा फेंको,
यदि हंसी का पात्र नहीं बनना।
सबको बताओ, सबको सिखाओ,
जन-जन तक पहुंचाओ ये संदेश।
पर्यावरण का बने संतुलन,
स्वच्छता का दें संदेश।

-छाया बघेल, कक्षा 6
पी.एम.श्री कंपोजिट विद्यालय आटा,संभल,उ.प्र.

सभी धर्मों का करें सम्मान

भारत विभिन्नताओं का देश है। हमारे देश में कई धर्मो के लोग रहते हैं। सभी के अपने नियम व आदर्श हैं। सभी धर्म के लोग अपने ईश्वर का पूजन अपने धर्म के अनुसार करते हैं। यह अच्छी परंपरा है। भारतीय संविधान सभी को अपने धर्म के अनुसार व्यवहार करने की बात करता है। संविधान में सभी धर्मो के लोगों को समान अधिकार दिए गए हैं। इसलिए जरूरी है हम सभी धर्मो का सम्मान करें। कुछ लोग अपने धर्म के लोगों का तो सम्मान करते हैं। परंतु दूसरे धर्म के प्रति वे घृणा या द्वेष की भावना रखते हैं। यह ठीक नहीं है। हमारे देश में कई बार धार्मिक दंगे होना इस बात का प्रमाण है कि कुछ लोग दूसरे धर्म के प्रति घृणा का भाव फैलाते हैं। धार्मिक दंगों के कारण सरकार भी दंगों से निबटने में व्यस्त हो जाती है। जिस समय व शक्ति का उपयोग सरकार दंगा नियंत्रण में लगाती है। उस समय व शक्ति का उपयोग देश के विकास में लगाया जा सकता है।

मैं कहना चाहता हूं कि हमें सभी धर्मो का सम्मान करना चाहिए। व हर धर्म के लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए। सभी धर्मो में समाज कल्याण की बात कही जाती है। इसलिए हम सबको समाज व देश के कल्याण के लिए तत्पर होना चाहिए।

- शुभम सिंह जलाल, कक्षा 10
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

नवोदय विद्यालय

जवाहर नवोदय विद्यालय,
अच्छा यहां का अनुशासन।
खुश रहते बच्चे सारे,
सबका खुश है मन।
पढ़ाई के संग यहां पर,
खेलकूद भी होते हैं।
तबला और योग सिखाते,
शाम को समय पर सोते हैं।
छात्रावास हमारा साफ रहे,
ऐसा ही कुछ करना है।
कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
गलत काम से डरना है।
मेहनत करके बच्चों को,
जीवन सफल बनाना है।
अपनी मेहनत के बल पर,
देश को आगे बढ़ाना है।

-हार्दिक मनराल,कक्षा 6
जवाहर नवोदय विद्यालय सुयालबाड़ी,नैनीताल

बंदर मामा

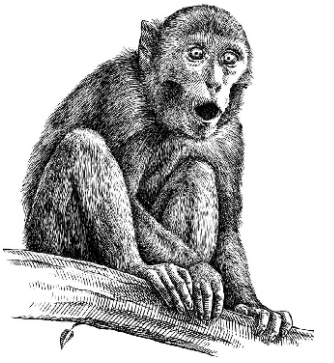

बंदर मामा बंदर मामा,
क्यों शैतानी करते हो।
बहुत मचाते हो ऊधम,
बच्चों से न डरते हो।
बच्चे को चिपकाकर रखते,
उसे भी ज्ञान दिया करो।
बच्चे हैं भगवान का रूप,
कभी न उन्हें सताया करो।

-जिया,कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय क्यारी गुसाई, टिहरी

मेरा पार्क और मेरे दोस्त

मेरा नाम वसुंधरा पंत है। मैं रूद्रपुर में रहती हूं। मेरा घर ग्रीन पार्क कॉलोनी में है। मेरे घर के सामने एक बहुत बड़ा पार्क है। उस पार्क के चारों ओर बहुत से पेड़-पौधे उगे हैं। मैं अपनी दोस्तों के साथ रोज उस पार्क में खेलती हूं। उस पार्क में हम खो-खो, बैडमिंटन, तथा बरफ-पानी जैसे खेल खेलते हैं। वैसे तो मेरे बहुत से दोस्त हैं। मन्नु, अनविका, और आरवी मेरे तीन प्रिय दोस्त हैं। मैं और मेरा भाई अपने दोस्तों के साथ रोज पार्क में खेलते हैं।

एक दिन बालप्रहरी के संपादक श्री उदय किरौला जी हमारे घर पर आए। उनको मेरे पापा के साथ कहीं जाना था। रात को वे हमारे घर पर ही रहे। जब वे हमारे घर आए। तब हम खेल रहे थे। मेरे पापा किरौला जी को पार्क में ही लाए। वहां मेरे सारे दोस्त थे। मेरे पापा ने सारे बच्चों को गोल घेरे में बैठने को कहा।

उदय किरौला जी ने हमें पार्क में बहुत सारी कहानियां सुनाई। हमें पार्क में बहुत सारे खेल भी कराए। मुझे तथा मेरे दोस्तों को कहानियां और खेल पसंद आए। हम सारे दोस्त उस दिन की मस्ती को याद करते हैं। मुझे पार्क में खेलना पसंद है। खेल हमारी सेहत के लिए जरूरी है। सारे बच्चों का खेलना जरूरी है।

- वसुधा पंत, कक्षा-6
कोलंबस पब्लिक स्कूल रूद्रपुर,ऊधमसिंहनगर

मेरा गांव

डोटियालगांव है मेरा गांव,
सबसे सुंदर सबसे प्यारा।
ताकुला बाजार के निकट,
प्यारा सुंदर गांव हमारा।
छोटे करते सम्मान बड़ों का,
ये गांव की पहचान है।
शांत वातावण है यहां,
इसकी महिमा महान है।

-दर्शन सिंह गुसाई, कक्षा 7
सस्वती शिशु विद्या मंदिर ताकुला,अल्मोड़ा

वर्षा

आसमान में आते बादल,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
आती जब वर्षा की बूंदें,
किसान सब हर्षाते हैं।
वर्षा में भीगना सबको,
बहुत ही अच्छा लगता है।
घर से पड़ती डांठ तब,
नाक बहने जब लगती है।

-गौरी देवी,कक्षा 8
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि.कपकोट, बागेश्वर

मोबाइल



मोबाइल है काम की चीज,
टार्च भी इसमें होता है।
बच्चे को झट से थमाते,
जब भी बच्चा रोता है।
जो देखता देर तक इसको,
आंखें खराब हो जाती हैं।
पढ़ने में नहीं लगता मन,
लत जिसे लग जाती है।
जीवन में आगे बढ़ना है तो,
पढ़ाई पर ध्यान देना होगा।
मन लगाकर करो पढ़ाई,
मोबाइल को बॉय कहना होगा।

-हर्ष महर, कक्षा 8
शिखर इंटर कालेज
डीडीहाट, पिथौरागढ़

सूरज दादा

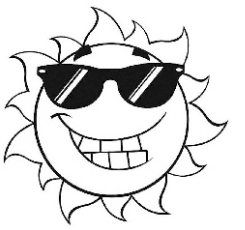

सूरज दादा सूरज दादा,
बादल देख डर जाते हो।
जाड़े में जब आता बादल,
तुरंत ही छिप जाते हो।
जाड़े में जल्दी आ जाना,
ठंड को तुम्हें भगाना है।
ठंड खतम हो जाएगी तब,
जाड़े को मजा चखाना है।

-वैष्णवी जोशी, कक्षा 7
आर्य कन्या इंटर कालेज अल्मोड़ा

बादल

आसमान में दिखते बादल,
वर्षा तब ही होती है।
कड़कती है जब बिजली,
छोटी बच्ची रोती है।
बरसात आते ही बादल,
रोज दिखाई देते हैं।
मेंढक उछलने लगते तब,
टर्र टर्र की आवाज करते हैं।

-रिया, कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांग गुसाई, टिहरी

अनुशासन

समय पर करो अपना काम,
अनुशासन यही कहलाता है।
जो रहता अनुशासन में,
वहीं सफल हो पाता है।
समय सारणी सभी बनाओ,
समय का सब रखो ध्यान।
खेल भी खेलो जरूर,
बनाओ अपनी अलग पहचान।

-करिश्मा, कक्षा 8
रा.उ.मा.वि.बैड़ा मझेड़ा, कपकोट, बागेश्वर

बच्चों की कलम से :



अंशिका, कक्षा-6
पी.एम. श्री ज. नवोदय वि. पुरोला,उत्तरकाशी



अंशिका बनकोटी, कक्षा-8
केंद्रीय विद्यालय, अल्मोड़ा



हर्षित सामंत, कक्षा-8
जवाहर नवोदय विद्यालय गंगरकोट, नैनीताल

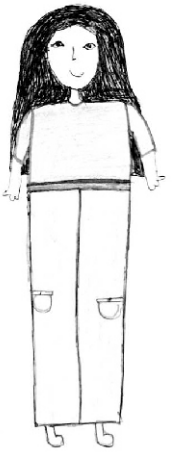

आरुषी, कक्षा-8
रा.इ.का. कोरूवा, कालसी, देहरादून

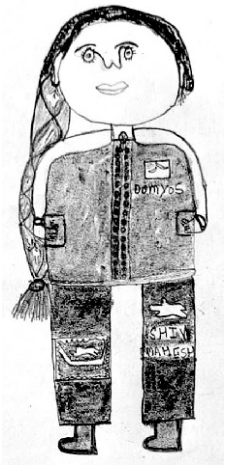

सलोनी, कक्षा-8
रा.जू.हाईस्कूल दुवाकोटी,चंबा,टिहरी



गुंजन कनवाल, कक्षा-7
विवेकानंद इंटर कॉलेज, अल्मोड़ा

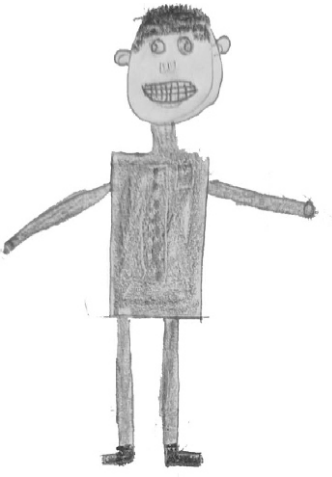

हार्दिक, कक्षा-3
रा.प्रा.वि. थानबेमर, नकोट, टिहरी

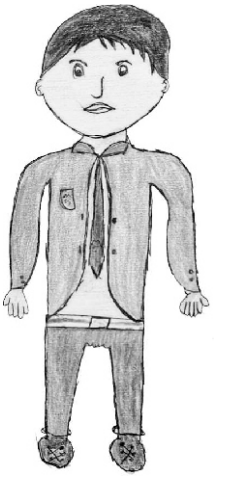

मनीष, कक्षा-8
जवाहर नवोदय विद्यालय गंगरकोट, नैनीताल



आयुष डसीला, कक्षा-7
राजकीय जूनियर हाईस्कूल जलना,अल्मोड़ा

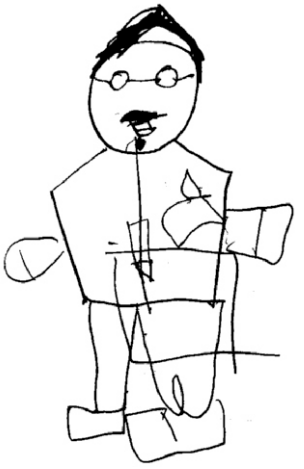

दीवा, कक्षा-4
सेंट जोसफ एकेडमी, देहरादून

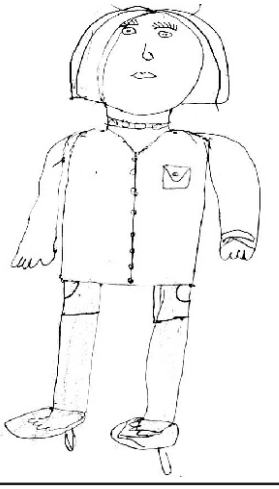

नंदनी, कक्षा-7
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि. गंगनानी, उत्तरकाशी

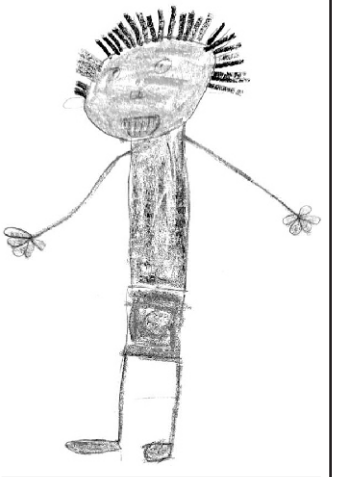

शिवम, कक्षा-3
रा.प्रा.वि.धरगांव, कठूड़, चंबा, टिहरी

निबंध प्रतियोगिता – 55

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'मेरा प्रिय खेल' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 1 अप्रैल,2026 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-54 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। – संपादक

पटाखे और प्रदूषण

इस बार भी दीपावली में लोगों ने खूब पटाखे जलाए। स्कूलों में पटाखे न जलाएं इसके लिए भाषण दिए जाते हैं। उसके बावजूद भी लोग पटाखे जलाते हैं। हमारे स्कूल की मैम कह रही थी।